24 / 10 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

मैं शिव शक्ति निर्भय स्वरूपा

➢➢ अन्तर्मुखता की गुफा में बैठकर मैं आत्मा...

➢➢ अपने अंतर्मन में छिपे सभी सूक्ष्म भय को चैक कर रही हूँ...

➳ _ ➳ अपने इन सभी भय से मुक्ति के लिए मैं आत्मा हीरा...

➳ _ ➳ देहरूपी डिबिया को छोड़ चल पड़ी हूँ...

➳ _ ➳ बाप दादा के पास, सूक्ष्म वतन में...

→ सूक्ष्म वतन में शक्तियों का अनवरत बहता झरना....

→ और उसके ऊपर खड़े है, बाहें फैलाए बापदादा,

→ मुझे गले लगाने को आतुर से...

→ बारी-बारी से इस झरने के नीचें बैठकर मैं आत्मा,

→ इन शक्तियों को स्वयं में समाँ रही हूँ...

- सहन शक्ति...
- सहयोग की शक्ति...
- समाने की शक्ति...
- परखने की शक्ति...

➳ _ ➳ शक्तियों से भरपूर हो...

➳ _ ➳ बाप दादा का हाथ पकड़ कर मैं आत्मा...

➳ _ ➳ चल पड़ी हूँ, एक सुंदर से म्यूजियम की तरफ...

→ जिसमे मुझ आत्मा के द्वारा...

→ अब तक धारण की गयी...

→ और उतारी गयी...

→ भिन्न भिन्न पोशाकें सजी हैं...

- मेरा सम्पूर्ण फ़रिश्ता,
- पूज्य स्वरूप
- और देवताई स्वरूप...

→ बीच-बीच में अब तक मुझ आत्मा के द्वारा...

→ सभी जन्मों में धारण की गयी...

→ देह रूपी पोशाकें भी देख रहीं हूँ...

- नारी का रूप तो,
- कहीं नर का रूप,
- कहीं बालक तो
- कहीं बुजुर्ग रूप...

➳ _ ➳ एक एक पोशाक को बारी-बारी से पहनती...

➳ _ ➳ और उतारती मैं आत्मा...

→ आत्मचिंतन कर रही हूँ...

→ अनेक बार जन्म और मरण के...

→ इस खेल का...

→ असंख्य बार इन पोशाकों को पहनने...

→ उतारने का क्रम जारी रखते हुए...

- आहिस्ता आहिस्ता...
- सभी भयों से मुक्त होती हुई...
- महसूस कर रही हूँ स्वयं को...

➳ _ ➳ हर भय से मुक्त हो मैं आत्मा,

➳ _ ➳ ये फ़रिश्ता ड्रेस उतारकर

➳ _ ➳ उड़ चली हूँ अब, परमधाम की ओर...

→ गहरे लाल रंग के प्रकाश के सागर में समाती हुई...

→ शक्तियों के पुंज, निराकार शिव पिता की छत्र छाया में...

→ मैं आत्मा स्वयं को शक्तियों से भरपूर करती हुई...

- अंतर्मन के कोने में छुपे हुए...
- भय के सभी अवशेष...
- लाल प्रकाश में बहकर
- परम धाम...
- और सूक्ष्म वतन के बीच में
- राख बनकर विलीन हो रहे हैं...
  - शिव शक्ति मैं आत्मा अब चल पड़ी हूँ...
  - संसार की सभी आत्माओं को निर्भय करने....
  - बापदादा का हाथ हाथो में लेकर...